राजीव गाँधी विश्वविद्यालय
ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश

अन्तरराष्ट्रीय वेब-सिम्पोजियम

वैश्विक महामारी के दौर में हिंदी मीडिया

24-26 जून, 2020 ZOOM एप्प द्वारा

MCNUJC
भोपाल, मध्य प्रदेश

30 मई को हिंदी पत्रकारिता दिवस मनाते हैं। यह दिन खास है, क्योंकि हिंदी भाषा में नई सोच, आधुनिकता और प्रगतिशील चेतना को लाने में हिंदी पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका अतुलनीय रही है। भारतीय नवजागरण के अग्रदूत राजा राममोहन राय के सुधार आन्दोलन से शुरू हुई भाषाई पत्रकारिता हिंदी में 'उदन्त मार्तण्ड' साप्ताहिक समाचार-पत्र के साथ उदित होती है। इस पत्र को भारतवर्ष का पहला हिंदी समाचार-पत्र कहलाने का गौरव प्राप्त है जिसकी परिकल्पना पंडित युगलकिशोर शुक्ल ने की और 30 मई, 1826 ई. को भारतीय हिंदी मीडिया की विधिवत स्थापना करते हुए भविष्य के मार्ग प्रशस्त किए।

हिंदी भाषा के उत्तरोत्तर विकास से हिंदी पत्रकारिता समृद्ध होती है और उसमें कई सारी विभूतियाँ जुड़ती चली जाती हैं। आगामी दिनों में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रताप नारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, बालमुकुन्द गुप्त, दुर्गाप्रसाद मिश्र और महामना मदन मोहन मालवीय की पत्रकारिता से होते हुए हिंदी पत्रकारिता नित नए सोपानों और सफलताओं को प्राप्त करती है जिसमें महात्मा गाँधी, तिलक, भगत सिंह, आम्बेडकर, प्रेमचंद, बाबूराव विष्णु पराड़कर, गणेश शंकर विद्यार्थी, माखनलाल चतुर्वेदी, रघुवीर सहाय, राजेन्द्र माथुर, कमलेश्वर, प्रभाष जोशी, आलोक मेहता जैसे योद्धा पत्रकारों का योगदान द्रष्टव्य है।

आज की कठिन घड़ी और चुनौतीपूर्ण स्थिति में जब पूरी दुनिया एक ऐसी वैश्विक महामारी कोविड-19 की चपेट में है जहाँ 'लोकल' से 'ग्लोबल' हुई दुनिया के सारे फार्मूले और सिद्धांत धराशायी हो गए हैं। पत्रकारिता ऐसे संकटग्रस्त समय में पूरी दुनिया के समक्ष सूचना-संप्राप्ति का जरूरी 'टूल्स' बनती दिख रही है। हिंदी मीडिया इस बड़ी मुहिम, संघर्ष या कहें लड़ाई में विश्वचेतस ढंग से सामने है और जन-समर्थन और जनपक्षधर कार्रवाई में उसकी भूमिका या प्रासंगिकता का प्रश्न असंदिग्ध हो चला है। सम्प्रभु राष्ट्र की समस्त आबादी के प्रति मीडिया की कर्तव्यनिष्ठा और उनका समर्पण-भाव स्तुत्य है तथा इस दिशा में संवेदनशील और उत्तरदायी ढंग से सोचे-समझे जाने की आवश्यकता है। विशेषकर उत्तर-पूर्व के राज्यों में हिंदी मीडिया पर विचारशील होना और कोरोना महामारी के इस मुश्किल समय में हिंदी मीडिया द्वारा बरती जा रही संवेदनशीलता तथा एहतियात के मद्देनज़र हिंदी मीडियाकर्मियों की अंतर्बाह्य चुनौतियों व खतरों का जायजा लिया जाना बेहद आवश्यक है। यह परिसंवाद इसलिए भी आवश्यक है कि ईस्वी सन् 30 मई, 1826 को पंडित युगलकिशोर शुक्ल के सम्पादकत्व में हिंदी पत्रकारिता ने जो आरंभिक यात्रा शुरू की थी वह आज इक्कीसवीं सदी में अपने उद्देश्य की प्राप्ति और जनहित के प्रयास और लोकसत्ता बनने के उपक्रम में कितना सफल और महत्त्वपूर्ण साबित हुई है; यह परिसंवाद इस उद्देश्य से भी आयोजित है। मौजूदा समय में मीडिया के लोकवृत्त में इजाफा और पारम्परिक माध्यमों से लेकर आभासी नवमाध्यमों तक पैठ के अतिरिक्त साहित्य-सिनेमा और विज्ञापन के क्षेत्र में भी मीडिया की भूमिका और प्रभाव प्रत्यक्ष है।

उपर्युक्त विषयवस्तु को ध्यान में रखते हुए राजीव गाँधी विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के अंतर्गत चल रहे परास्नातकीय प्रयोजनमूलक हिंदी डिप्लोमा पाठ्यक्रम की ओर से तीन दिवसीय वेब-सिम्पोजियम का आयोजन किया जा रहा है। **'वैश्विक महामारी के दौर में हिंदी मीडिया'** विषयक शीर्षक से 24, 25 व 26 जून को आयोजित यह अंतरराष्ट्रीय परिसंवाद राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, ईटानगर (अरुणाचल प्रदेश) तथा माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल (मध्य प्रदेश) के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित है। इस परिसंवाद में पूरे देश भर के मीडिया विशेषज्ञ और अन्तरराष्ट्रीय स्तर के वक्तागण जुडेंगे तथा कोविड-19 के वर्तमान आपदाकालीन स्थितियों-परिस्थितियों के बीच हिंदी मीडिया की भूमिका, महत्त्व एवं प्रासंगिकता पर परस्पर चर्चा-परिचर्चा, वाद-संवाद करेंगे। इस तीन दिवसीय वेब-सिम्पोजियम में अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतिभागिता एवं सहभागिता अभीष्ट है।

तीन दिवसीय संयुक्त आयोजन

उद्देश्य :

- राष्ट्रीय/ अन्तरराष्ट्रीय स्तर के आमंत्रित वक्तव्य
- संवादी-सत्र एवं पारस्परिक बातचीत का वैकल्पिक मंच
- कोरोना-काल में मीडिया कवरेज और राजभाषा हिंदी की स्थिति
- बहुविकल्पी मीडिया की भाषा, विचार एवं प्रस्तुति सम्बन्धी ज्ञान

मुख्य संरक्षक

प्रो. साकेत कुशवाहा
कुलपति

संरक्षक

प्रो. अमिताव मित्रा
सम कुलपति

संरक्षक

प्रो. तोमो रिबा
कुलसचिव

आयोजन समीति

प्रो. ओकेन लेगो
भाषा संकायाध्यक्ष

डॉ. श्याम शंकर सिंह
हिंदी विभागाध्यक्ष

प्रो. हरीश कुमार शर्मा
प्रोफेसर

डॉ. सत्य प्रकाश पाल
सहायक प्रोफेसर

डॉ. जमुना बीनी तादर
सहायक प्रोफेसर

डॉ. जोराम यालाम नाबाम
सहायक प्रोफेसर

तकनीकी सहायक

डॉ. शम्भू प्रसाद (सहायक प्रोफेसर)

डॉ. प्रचंड नारायण पिराजी
(सहायक प्रोफेसर)

ज्ञान राय (वीसेट)

अन्तरराष्ट्रीय वेब-सिम्पोजियम

हिंदी विभाग
राजीव गाँधी विश्वविद्यालय
रोनो हिल्स, दोइमुख, अरुणाचल प्रदेश

राजीव गाँधी विश्वविद्यालय
ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश

MCNUJC
भोपाल, मध्य प्रदेश

वैश्विक महामारी के दौर में हिंदी मीडिया

अन्तरराष्ट्रीय/राष्ट्रीय वक्ता

24, 25 एवं 26 जून, 2020

प्रो. संजय द्विवेदी

कुलपति, MCNUJC

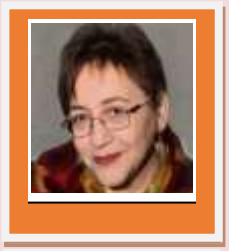

वान्या गांचेवा

बल्गारिया

कपिल कुमार

बेल्जियम

डॉ. मौना कौशिक

पद्मश्री येशे दोर्जी थोङची

संदीप सिसौदिया

प्रो. हितेंद्र मिश्र

रविशंकर रवि

प्रो. एम. वेंकटेश्वर

प्रो. पवित्र श्रीवास्तव

अकु श्रीवास्तव

मार्कण्डेय पाण्डेय

प्रताप सोमवंशी

डॉ. संदीप कुमार

डॉ. किशोर वासवानी

डॉ. मिहिर रंजन पात्र

डॉ. अनुशब्द

डॉ. संदीप भट्ट

डॉ. मनोहर लाल

डॉ. राज नारायण अवस्थी

दिनकर कुमार

अमृता मौर्य

वेब-सिम्पोजियम समयावली

24-26 जून, 2020

उद्घाटन-सत्र	24/06/20	**09 : 30 - 10 : 30 पूर्वाह्न**	**श्री येशे दोर्जी थोङची** **श्री रविशंकर रवि**
तकनीकी सत्र	24/06/20	**10 : 30 - 12 : 30 अपराह्न**	श्री अकु श्रीवास्तव श्रीमती अमृता मौर्य डॉ. धीरेन्द्र कुमार राय डॉ. संदीप कुमार वर्मा
तकनीकी सत्र	24/06/20	**03 : 00 - 05 : 15 सायं**	**प्रो. पवित्र श्रीवास्तव** **डॉ. राजनारायण अवस्थी** **श्री दिनकर कुमार** **डॉ. अनुशब्द**
विशेष-सत्र	24/06/20	**05 : 30 - 06 : 00 सायं**	श्री कपिल कुमार
तकनीकी सत्र	25/06/20	**09 : 30 - 12 : 30 अपराह्न**	**श्री प्रताप सोमवंशी** **डॉ. मिहिर रंजन पात्र** **डॉ. किशोर वासवानी** **डॉ. संदीप भट्ट**
तकनीकी सत्र	25/06/20	**03 : 00 - 05 : 00 सायं**	प्रो. एम. वेंकेटेश्वर प्रो. हितेन्द्र मिश्र डॉ. मनोहर लाल डॉ. मियाजी हज्जाम
तकनीकी सत्र	26/06/20	**09 : 30 - 12 : 30 अपराह्न**	**चयनित प्रतिभागी : वक्तव्य**
तकनीकी सत्र	26/06/20	**02: 00 - 03 : 30 अपराह्न**	श्रीमती वान्या गांचेवा डॉ. मौना कौशिक श्री मार्कण्डेय पाण्डेय
समापन-सत्र	26/06/20	**03: 30 - 05: 00 सायं**	**प्रो. संजय द्विवेदी** **श्री संदीप सिसौदिया**

मुख्य बिंदु

डॉ. मिहिर रंजन पात्र (सहायक प्रोफेसर, गुरु जम्भेश्वर युनिवर्सिटी ऑफ़ साइंस और टेक्नोलॉजी, हिसार, हरियाणा) : *स्वायत सबलता और आर्थिक मजबूती की दृष्टि से विज्ञापन मीडिया-प्रबंधन का अनिवार्य अंग हैं; कला और विज्ञान की कल्पनाशील रचनात्मकता ने विज्ञापन को हाल के वर्षों में काफी लोकप्रिय बनाया है; राजनीतिक नारे और मुहावरे विज्ञापन की शक्ल में जनसमाज के मनोविज्ञान एवं मनोजगत को गहरे प्रभावित कर चुके हैं; पेशेवर ढंग से देखें और विचार करें, तो कोविड-।9 के मौजूदा संकटकाल में मीडिया हाउस के समक्ष बड़ी चुनौतियाँ आन खड़ी हुई हैं; छोटे और मझोले मीडिया-तंत्र सर्वाधिक नुकसान झेल रहे हैं; इसमें विज्ञापन का मसला विचारणीय है; इन दिनों विज्ञापन की दुनिया में क्या कुछ बदलाव आये हैं; पहले और अब के विज्ञापन को देखते हुए पूँजी की रस्साकशी में फँसे मीडिया-जगत को विज्ञापन के दृष्टिकोण से मौजूदा समय पर संवेदनशील ढंग से विचार प्रस्तुत करेंगे।*

श्री अकु श्रीवास्तव, सम्पादक, नवोदय टाइम्स (पंजाब केसरी युग) : जनमाध्यम; भारतीय जनसंचार माध्यमों के नैतिक मानदंड और स्वायत्तता; दरअसल, भारतीय ज्ञान-परम्परा हिंदी पत्रकारिता; हिंदी भाषा की खड़ी बोली में हुए आरंभिक प्रयास; पंडित युगल किशोर शुक्ल; आज की पत्रकारिता मानवीय मूल्य तथा सामाजिक सरोकार और भारतीय प्रायद्वीप की पत्र-पत्रिकाएँ; उनके योगदान और महत्त्व; वर्तमान में कोविड-19 से उपजे वैश्विक संकट; जनमाध्यमों की ताकत और उनकी पहुँच; जन-पक्षधरता के दायित्व-बोध; मीडिया की भूमिका और मौजूदा हालात में उनकी उपस्थिति; बेहद अनिवार्य 'टुल्स' होने के दावे; वैश्विक महामारी पाठक/श्रोता/दर्शक की अपेक्षाएँ; सम्पादकीय विवेक-दृष्टिकोण और जवाबदेही का मीडिया किस प्रकार निर्वहन कर रही है आदि।

श्री प्रताप सोमवंशी (कार्यकारी सम्पादक, हिन्दुस्तान टाइम्स ग्रुप) : वर्तमान जोखिम और चुनौतियों से भरा संकटग्रस्त समय में मीडिया-हाउस की क्या स्थिति है, अंदरुनी-बाह्य चुनौतियों से निपटने हेतु मीडिया से जुड़े एवं सम्बन्धित लोग अपनी कार्य-प्रणाली में क्या और किस प्रकार के नीतिगत अथवा दृष्टिगत बदलाव लाने पर विवश हुए हैं, उनका अपना प्रबंधन-तंत्र इन कठिनाईयों से कितनी कुशलता से जूझ रहा है और अंततः मीडिया इस तकलीफदेह समय की सच्ची और पक्की पड़ताल कितनी ईमानदारी, प्रतिबद्धता और वस्तुनिष्ठ ढंग से कर रहा है; आदि पर वक्तव्य देंगे।

डॉ. राजनारायण अवस्थी (ईसीआईएल, हैदराबाद) : मौजूदा संकटकाल में मीडिया की वस्तुस्थिति एवं हालात के बीच राजभाषा हिंदी की बढ़ती उपयोगिता, तकनीकी अनुवाद एवं यूनीकोड प्रयोग-अनुप्रयोग सम्बन्धी विषय को केन्द्र में रखकर अपना वक्तव्य देंगे। हिंदी के वैश्विक संदर्भ में नए क्षितिज द्वारा नई संभावनाएं आकार ले रही हैं और उत्तरोतर राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में विपुल अवसर एवं कुशल लोगों की मांग बढ़ी है, इस बारे में बात रखेंगें।

प्रो. एम. वेंकेटेश्वर (पूर्व अध्यक्ष, इफ्लू, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद) : सिनेमा अपने आरंभ के दिनों से ही समाज-संस्कृति आधारित मानवीय मूल्यों, प्रश्नों, घटनावलियों, यथार्थ प्रसंग व सन्दर्भों आदि से बड़ी गहराई से जुडा रहा है; वैश्विक स्तरीय सिनेमा-तकनीक ने रोमांच और आश्चर्य की हद तक मनुष्य और मनुष्यता से जुडे शाश्वत प्रश्न उठाये हैं; सिनेमा अपनी विधा एवं तकनीकी टूल्स में दुनिया भर के मनुष्यों के पक्ष में खड़ी रही है; आज की कठिनतम स्थिति में मीडिया में सिनेमा के सोच का एंग्ल या कहें प्रजेंटेशन का सिनेमाई चेहरा कैसा है अथवा आने वाले निकट भविष्य में होने वाला है; आदि बिन्दुओं को केन्द्र में रखकर वक्तव्य देंगे।

प्रो. हितेन्द्र मिश्र (हिंदी विभाग, नेहू, शिलांग) : मौजूदा संकटकाल (COVID-19) में मीडिया की वस्तुस्थिति एवं हालात को संवेदनशील ढंग से समझने और ऑडियंस-समूह को साधने में मौजूदा मीडिया किस हद तक सफल रहा है? हिंदी अख़बार, न्यूज़ चैनल, आनलाइन वेबसाइट आदि की भाषा एवं विचार में क्या कुछ बदलाव देखने को मिल रहे हैं? पाठक के मनोविज्ञान, व्यवहार और व्यक्तित्व को हालिया ख़बर-संसार ने कितना और कैसे प्रभावित किया है, आदि बिन्दुओं को केन्द्र में रखकर अपना वक्तव्य देंगे।

श्री मार्कण्डेय पाण्डेय (सीनियर कारेस्पांडेंट, नवोदय टाइम्स, गुरुग्राम) : देश के विभिन्न क्षेत्रों और सुदुरवर्ती इलाकों तक की ख़बरें-सूचनाएँ त्वरित गति से प्रकाश में आ रही हैं; सोशल मीडिया के प्लेटफार्म पर वैकल्पिक पत्रकारिता का एक बड़ा फलक है, जो 'मेनस्ट्रीम मीडिया' या कहें राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय स्तर के मीडिया-हाउस को प्रत्यक्ष-परोक्ष ढंग से प्रभावित कर रहे हैं; इस बदले हुए लोकवृत्त और सूचना-राजमार्ग में पारम्परिक जनमाध्यमों के समक्ष ख़बरों के चयन तथा उनके प्रकाशन और प्रसारण का मसला अत्यंत महत्त्वपूर्ण और चुनौतीपूर्ण है; इस परिप्रेक्ष्य में एक संवाददाता-पत्रकार को किन-किन मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों से गुजरना पड़ रहा है; से संबंधित वक्तव्य देंगे।

डॉ. धीरेन्द्र कुमार राय (सहायक प्राध्यापक, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) : कोविड-19 का प्रभाव; मीडिया शिक्षण संस्थान; परिस्थितिजन्य-संकट और मीडिया; अध्यापकों-विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति; देश-विदेश प्रतिष्ठित मीडिया संस्थान स्वतंत्र लेखन अथवा पत्रकारिता पर वैश्विक महामारी का प्रभाव; अकादमिक क्षेत्र और उससे जुड़े मीडिया में कार्यरत लोगों पर कोविड-19 का प्रभाव; आसन्न संकट से निपटने हेतु भारतीय मीडिया की तत्परता, उनकी भाषा और विचार में हुये बदलाव; आज की मीडिया मौजूदा कठिन हालातों में सूचना-सम्प्रेषण के 'टुल्स' के रूप में किस तरह शब्द एवं शब्दावलियों का संवेदनशील प्रयोग करती दिख रही है और भाषा की गंभीर के प्रति सचेष्ट-भाव।

डॉ अनुशब्द (सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग तेजपुर विश्वविद्यालय) : कार्टून पत्रकारिता अपनी मितव्ययी प्रकृति के बावजूद यथार्थ का असल आईना है। तल्खी एवं सच्चाई उसके मूल तत्व हैं। प्रभावशाली माध्यम के रूप में कार्टून विधा की चर्चा और उसके महत्त्व की पहचान आवश्यक है। कार्टून विधा सांकेतिक अर्थ छवियों एवं अर्थच्छटाओं के साथ की बेहतरीन संप्रेषण कला है। कार्टून पत्रकारिता अपने समय के सच को सूक्ष्म ढंग से पकड़ने तथा उन्हें सफल तरीके से अभिव्यक्त कर पाने में कितने उपयुक्त माध्यम हैं; इस वक्तव्य से समझने में आसानी होगी और पत्रकारिता की एक सशक्त विधा से परिचत हो सकेंगे।

श्रीमती अमृता मौर्य (सम्पादक एवं प्रकाशक ड डेजर्ट ट्रेल, राजस्थान) : कोविड-19 पर्यावरण का संवेदनशील पक्ष; मीडिया आधारित सभी जनसंचार माध्यम और पर्यावरणीय संवेदनशीलता; वैश्विक महामारी के कारण मानवजनित कार्यकलाप और मानव-त्रासदी; आसन्न संकट से निपटने हेतु बौद्धिक उपक्रम; संचार के 'टुल्स' एवं संचार माध्यम, पर्यावरण-सुरक्षा के प्रश्न और संवेदनशीलता; मीडियाकर्मी उनका मुख्य योगदान, उनकी चेतनात्मकता और भूमिका।

श्री दिनकर कुमार (सम्पादक, गुवाहाटी समाचार) : मौजूदा संकटग्रस्त समय में मीडिया विश्वसनीय जनमाध्यम की भूमिका में आगे है। आपदा की इस घडी में मीडिया के विभिन्न माध्यमों से जुड़े लोगों की स्थिति पर विचार होना अपेक्षित है। छोटे एवं मझोले पत्र-पत्रिकाओं की स्थिति ज्यादा खराब है। पत्रकारिता के प्रति सेवाभाव और पूर्ण निष्ठा के बावजूद इस पेशे के लोग बाहरी-भीतरी किन जोखिमों से गुजर रहे हैं और वे किस प्रकार चौतरफा मुसीबत से घीरे हैं; के बारे में आपके वक्तव्य से परिचित हो सकना अपेक्षित है। इससे पूर्वोत्तर की पत्रकारिता एवं स्थिति समझ सकेंगे।

पंजीकरण

पंजीकरण 'पहले आओ पहले पाओ' के आधार पर किया जाएगा। यह निःशुल्क है। कुल सीटें 450 हैं। पंजीकरण करने की अंतिम तिथि 23/06/2020 है। प्रतिभागियों से अनुरोध है कि वे स्वैच्छिक रूप से न्यूनतम 100 रु. का योगदान PMCARE FUND में कर सकते हैं तथा इसकी सूचना हमें अवश्य दें। संबंधित विषय पर तैयार शोध-आलेख ई-मेल (digitalhindi.rgu@gmail.com) द्वारा भेजें। चयनित प्रतिभागियों को शोध-आलेख प्रस्तुत करने का अवसर दिया जाएगा। कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी पंजीकृत ई-मेल के माध्यम से दी जाएगी। सभी पंजीकृत प्रतिभागियों को ई प्रमाण-पत्र दिए जायेंगे। पंजीकरण के लिए दिए गए लिंक पर क्लिक करें- https://forms.gle/JYhJzaqx28gUXCuV9

राजीव गाँधी विश्वविद्यालय

रोनो हिल्स, दोइमुख, अरुणाचल प्रदेश-791 112

राजीव गाँधी विश्वविद्यालय की स्थापना अरुणाचल विश्वविद्यालय के नाम से सन् 1984 ई. में हुई, जिसे 2007 ई. में केन्द्रीय विश्वविद्यालय बनने का गौरवपूर्ण दर्जा प्राप्त हुआ। इस विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की सक्रियता सन् 1999 के अपने स्थापना वर्ष से ही उपलब्धिपूर्ण और अकादमिक प्रगति की दिशा में सतत प्रयत्नशील रही है। आज यह विश्वविद्यालय पूर्वोत्तर के अकादमिक दुनिया में अपनी विशिष्ट पहचान और सक्रियता के लिए जाना जाता रहा है। हाल के कुछ वर्षों में हुए अकादमिक कार्य, शोध-कार्य, अध्ययन-अध्यापन के अतिरिक्त अपने रचनात्मक प्रयास एवं साहित्यिक गतिविधियों द्वारा आगे बढ़ने की प्रक्रिया में जी-जान से जुटा हुआ है। हिंदी विभाग में इस समय हिंदी एम.ए., पी-एच.डी, एम.फिल. के साथ प्रयोजनमूलक हिंदी विषय-क्षेत्र में एकवर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम संचालित कर रहा है। हिन्दी विभाग के पुराछात्र (एलुमनी) आज पूर्वोतर क्षेत्र के विश्वविद्यालय; महाविद्यालयों, स्कूलों एवं प्रशासानिक क्षेत्रों में अपनी सेवाएं दे रहे हैं और हिंदी विभाग तथा राजीव गाँधी विश्वविद्यालय की गरिमा को बढ़ा रहे हैं।

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय

विकास भवन, प्रेस कॉम्प्लेक्स ज़ोन-I एम.पी. नगर, भोपाल (म.प्र.)-462 011

सन् 1990 में स्थापित माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल पत्रकारिता एवं जनसंचार विषयक शिक्षा एवं शोध के क्षेत्र में देश की अग्रणी संस्था है। हिंदी के यशस्वी सम्पादक और राष्ट्रीय चेतना के कवि माखनलाल चतुर्वेदी की कर्मभूमि मध्य प्रदेश में यह विश्वविद्यालय उनके नाम से स्थापित है। पिछले 29 वर्षों से पत्रकारिता, मीडिया, जनसंचार, कंप्यूटर अनुप्रयोग, डिजिटल मीडिया, प्रबंधन-शिक्षा के क्षेत्र में विश्वविद्यालय ने अभूतपूर्व सफलता एवं अकादमिक उपलब्धि अर्जित की है। लगभग 1700 संस्थानों के साथ जुड़े लाखों विद्यार्थी विश्वविद्यालय परिवार का हिस्सा हैं। विश्वस्तरीय मीडिया शिक्षा एवं मीडिया शोध की दिशा में नवाचारी और अंतरविषयी कार्यशैली का प्रदर्शन करते हुए विश्वविद्यालय अपनी सार्थक भूमिका का निर्वहन कर रहा है। विश्वविद्यालय मीडिया शिक्षा एवं जनसंचार विषयक विभिन्न क्षेत्रों- विज्ञापन, सिनेमा, न्यू मीडिया, सूचना एवं कंप्यूटर सुरक्षा, व्यावसायिक प्रबंधन आदि के साथ कौशल एवं व्यक्तित्व विकास का महत्ती कार्य कर रहा है

संयोजकद्वय

डॉ. राजीव रंजन प्रसाद
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
राजीव गाँधी विश्वविद्यालय
रोनो हिल्स, दोइमुख
अरुणाचल प्रदेश-791 112
मो. : 6909115086
ई.मेल : rajeev.prasad@rgu.ac.in

डॉ. विश्वजीत कुमार मिश्र
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
राजीव गाँधी विश्वविद्यालय
रोनो हिल्स, दोइमुख
अरुणाचल प्रदेश-791 112
मो. : 9863027568
ई.मेल : nehu00vishwajit@gmail.com